Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 34

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

27 अक्तूबर 2016 ई

25 मुहर्रम 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

अल्लाह तआला की आदत इस तरह से है कि प्रथम अपने नबियों और भेजे हुओं को इतनी मोहलत देता है कि दुनिया के कई हिस्से में उनका नाम फैल जाता है और उनके दावा से लोग सूचित हो जाते हैं और फिर आसमानी चिन्ह और बौद्धिक तर्क और मआरिफ़ के साथ लोगों पर दलील को पूर्ण कर देता है ख़ुदा के आदेश से ख़ुदा के रसूलों को प्रसिद्धि दी जाती है और ख़ुदा के फरिशते धरती पर उतरते और नेक लोगों के दिलों में डालते हैं कि जिन राहों को तुम ने धारण कर रखा है वे सही नहीं हैं तब ऐसे लोग मार्ग की खोज में लग जाते है

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

प्रश्न (7) दावत पहुंच जाने का क्या मतलब है।

उत्तर: दावत पहुंचा देने में दो बातें आवश्यक होती हैं। पहली यह है कि वह व्यक्ति जो ख़ुदा की ओर से भेजा गया है वह लोगों को सूचना दे दे कि ख़ुदा तआला की ओर से भेजा गया हूँ और उन्हें उन की ग़लतियों पर सूचित कर दे कि अमुक अमुक आस्थाओं में तुम भूल पर हो। या अमुक अमुक व्यावहारिक स्थिति में तुम सुस्त हो। दूसरा यह कि आसमानी चिन्ह और बौद्धिक तर्क और मआरिफ़ से अपना सच्चा होना साबित करे और अल्लाह तआला की आदत इस तरह से है कि प्रथम अपने नबियों और भेजे हुओं को इतनी मोहलत देता है कि दुनिया के कई हिस्से में उनका नाम फैल जाता है और उनके दावा से लोग सूचित हो जाते हैं और फिर आसमानी चिन्ह और बौद्धिक तर्क और मआरिफ़ के साथ लोगों पर दलील को पूर्ण कर देता है और दुनिया में आदत से हट कर प्रतिष्ठा देना और रोशन निशानों के साथ दलील का पूरा करना ख़ुदा तआला के लिए असंभव नहीं जैसे तुम देखते हो कि एकदम आकाश के एक किनारे से बिजली चमकती और दूसरे किनारे तक फैल जाती है। इसी तरह ख़ुदा के आदेश से ख़ुदा के रसूलों को प्रसिद्धि दी जाती है और ख़ुदा के फरिशते धरती पर उतरते और नेक लोगों के दिलों में डालते हैं कि जिन राहों को तुम ने धारण कर रखा है वे सही नहीं हैं तब ऐसे लोग मार्ग की खोज में लग जाते हैं और दूसरी ओर ख़ुदा तआला ऐसे साधन पैदा कर देता है कि उसके युग के इमाम की ख़बर उन तक पहुँच जाती है। विशेषकर यह युग तो ऐसा युग है कि कुछ दिनों में एक नामी डाकू की भी बदनामी के साथ दुनिया में प्रतिष्ठा हो सकती है तो क्या ख़ुदा तआला के बन्दे जिनके साथ हर समय ख़ुदा है वह इस दुनिया में प्रतिष्ठा नहीं पा सकते और छिपे रहते हैं और ख़ुदा उनकी प्रतिष्ठा में सक्षम नहीं होता। * मैं देखता हूँ कि ख़ुदा तआला का फजल ऐसे रूप से मेरे साथ सम्मिलित है कि मेरी दलीलों को पूर्ण करने के लिए और अपने नबी के धर्म के प्रकाशन के लिए ख़ुदा तआला ने वह सामान निर्धारित कर रखे हैं कि पहले से किसी नबी को उपलब्ध नहीं हुए थे अत: मेरे समय में विभिन्न देशों के आपसी संबंध सवारी, रेल और तार और डाक का प्रबंध और जल तथा थल यात्रा के प्रबंध इतने बढ़ गए हैं कि मानो अब सभी देश एक ही देश का आदेश रखते हैं बल्कि एक ही शहर का आदेश रखते हैं और एक व्यक्ति अगर सैर करना चाहे तो थोड़े समय में दुनिया की सैर करके आ सकता है। इसके अतिरिक्त पुस्तकों का लिखना ऐसा सुविधाजनक और आसान हो गया है कि ऐसी ऐसी छापे की मशीनें आविष्कार हो गई हैं कि जिस किसी बड़ी किताब के कुछ जिल्दें सौ साल में भी नहीं लिख सकते थे वे कई लाख पर्चे एक दो वर्ष में लिख सकते और सारे देश में प्रकाशित हो सकते हैं और हर एक पहलू से तब्लीग़ के लिए भी इतनी आसानियां हो गई हैं कि हमारे देश में आज से सौ साल पहले उनका नामो निशान न था और आज से पहले अगर पचास साल पर नज़र डाली तो साबित होगा कि अक्सर लोग निरक्षर और जाहिल थे मगर अब दरसों की अधिकता से, जो गांवों में भी स्थापित किए गए हैं इतनी क्षमता लोगों को प्राप्त हो गई है कि वह धार्मिक किताबों को बड़ी आसानी से समझ सकते हैं और मेरी ओर से तब्लीग़ की कार्रवाई यह हुई है कि मैंने पंजाब और भारत के कुछ शहरों जैसे अमृतसर, लाहौर, जालंधर, सियालकोट और दिल्ली और लुधियाना आदि में बड़ी बड़ी भीड़ों में ख़ुद जाकर ख़ुदा तआला के संदेश को पहुंचाया है और हज़ारों मनुष्य के सामने इस्लामी शिक्षा का गुणगान प्रस्तुत किए हैं और 70 के लगभग किताबें अरबी और फारसी और उर्दू और अंग्रेजी में इस्लाम की सत्यता के विषय में जिनकी संख्या एक लाख के लगभग होंगी संकलन करके इस्लामी देशों में प्रकाशित की हैं और इसी उद्देश्य के लिए कई लाख विज्ञापन प्रकाशित किए हैं और ख़ुदा तआला की कृपा और उसकी हिदायत से तीन लाख से ज्यादा लोग मेरे हाथ पर अपने गुनाहों से आज तक तौबा कर चुके हैं और इतनी तेज़ी से यह कार्रवाई जारी है कि प्रत्येक महीने में सैंकड़ो आदमी बैअत में दाखिल होते जाते हैं और हमारे सिलसिला से विदेशों के लोग भी अनजान नहीं हैं बल्कि अमेरिकी देशों और यूरोप के दूर दराज़ के देशों तक हमारी दावत पहुंच गई है यहां तक कि अमेरिका में कई लोग हमारी जमाअत में दाख़िल हो चुके हैं और ख़ुद उन्होंने असाधारण भूकंप की भविष्यवाणियों को हमारे निशानों का सबूत देने के लिए अमेरिका के नामी अखबारों में प्रकाशित किया है और यूरोप के कुछ लोग भी हमारी जमाअत में शामिल हैं और इस्लामी देशों का तो क्या उल्लेख करें कि अब तक कि जैसा मैं ने अभी वर्णित किया है कुछ तीन लाख से अधिक जमाअत में शामिल हो चुके हैं और हज़ारों निशानों से लोग सूचना पा चुके हैं और अधिकतर उन में सालेह और नेक हैं।

* आज से पच्चीस साल पहले बराहीने अहमदिया में ख़ुदा तआला का यह इल्हाम मेरी बारे में मौजूद है। यह उस समय का इल्हाम है, जबकि मैं एक छुपा हुआ जीवन बसर करता था और मेरे पिताजी के अतिरिक्त कुछ परिचय रखने वालों के कोई मुझे जानता भी नहीं था और वह इल्हाम है। اَنۡتَ مِنِّیۡ بِمَنۡزِلَۃِ تَوۡحِیۡدِیۡ وَتَفۡرِیۡدِیۡ فَحَانَ اَنۡ تُعۡرَفَ بَیۡنَ النَّاسِ अर्थात तू मुझ से मेरी तौहीद तथा एक होने के स्थान पर है। इसलिए वह समय आ गया है कि तुझे हर तरह की मदद दी जाएगी और दुनिया में तू सम्मान के साथ इज़्जत दिया जाएगा और प्रतिष्ठा देने के वादे को एकेश्वरवाद और एक होने के साथ उल्लेख करना इस बिंदु की ओर संकेत मिलता है कि प्रताप और इज़्ज़त के साथ प्रसिद्धि पाना मूल अधिकार तो ला शरीक ख़ुदा का ही है। फिर जिस पर ख़ुदा तआला की विशेष कृपा हो वह अपनी अत्यधिक महवियत (लीनता) के कारण ख़ुदा तआला की तौहीद का प्रतिनिधि हो जाता है और दो होने की भावना का रंग उस से जाता रहता है तब ख़ुदा तआला उसी तरह उस को इज़्ज़त और प्रताप और गरिमा के साथ प्रतिष्ठा देता है जैसा कि वह अपने आप को प्रतिष्ठा देता है क्योंकि तौहीद और तफरीद यह अधिकार पैदा करती है कि वह ऐसी ही इज़्ज़त प्राप्त करे। इसी में से।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन,भाग 22, पृष्ठ 169 -172)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

विश्वव्यापी एटमी विनाश

हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह

आज संसार में अशांति और तृतीय विश्व युद्ध के बादल छाए हुए हैं। अरब जगत एक समय से अशान्ति को भोग रहा है। विश्व की बड़ी एटमी शक्तियां आपने स्वार्थ के लिए खेल रच रही हैं। ऐसे समय में अगर विनाशकारी एटमी हथियार का प्रयोग हुआ तो मानवता का सर्वनाश अवश्य होगा। अहमदिया मुस्लिम जमाअत के चौथे ख़लीफा हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब रहमहुल्लाह तआला ने अपनी पुस्तक "इलहाम अक्ल इल्म तथा सच्चाई" में एटमी विनाश के बारे में पवित्र कुरआन के भविष्यवाणी तथा इस से बचाव के उपाय वर्णन किए हैं। मूल पुस्तक अंग्रेज़ी भाषा में लिखी गई है जिस का उर्दू भाषा में अनुवाद हो चुका है। यहां पाठकों के लिए पुस्तक का सम्बन्धित लेख प्रस्तुत है। - सम्पादक)

आप फरमाते हैं कि

"वर्तमान युग से संबंधित कुछ क़ुर्आनी भविष्यवाणियां असाधारण तौर पर सार्वभौमिक महत्त्व रखती हैं। उनमें से एक ऐसी ही भविष्यवाणी संभावित एटमी विनाश से संबंधित है।

यह भविष्यवाणी उस समय की गई जब एटमी विस्फोट की कल्पना किसी के विचार और गुमान तक में नहीं थी परन्तु जैसा कि अभी वर्णन किया जाएगा पवित्र क़ुर्आन की कुछ आयतों में बड़ी स्पष्टता के साथ ऐसे बारीक कणों का वर्णन मिलता है जो असीम ऊर्जा का स्रोत है जैसे कि अपने अन्दर नर्काग्नि समेटे हुए हैं। निम्नलिखित आयतें आश्चर्यजनक सीमा तक बिल्कुल इसी विषय पर प्रकाश डालती हैं :-

وَيۡلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِۨ الَّذِىۡ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ يَحۡسَبُ اَنَّ مَالَهٗۤ اَخۡلَدَهٗ كَلَّا لَيُنۡۢبَذَنَّ فِى الۡحُطَمَةِ وَمَاۤ اَدۡرٰكَ مَا الۡحُطَمَةُ نَارُ اللّٰهِ الۡمُوۡقَدَةُ الَّتِىۡ تَطَّلِعُ عَلَى الۡاَفۡـِٕدَةِ اِنَّهَا عَلَيۡهِمۡ مُّؤۡصَدَةٌ فِىۡ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ

(अलहुमज़ा 104 : 2-10)

अनुवाद - तबाही हो प्रत्येक चुगली करने वाले दोषान्वेषी के लिए, जिसने धन एकत्र किया तथा उसकी गणना करता रहा वह विचार किया करता था कि उसका धन उसे अनश्वरता प्रदान करेगा। सावधान वह अवश्य **हुतम:** में गिराया जाएगा और तुझे क्या मालूम की हुतम: क्या है। वह परमेश्वर की भड़काई हुई अग्नि है जो हृदयों पर लपकेगी। नि:संदेह वह उनके विरुद्ध बन्द करके रखी गई है ऐसे स्तम्भों में जो खींच कर लम्बे किए गए हैं।

यह संक्षिप्त सूरह आश्चर्यजनक भविष्यवाणियों का जबरदस्त संग्रह है, जिन की उस युग में कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। क्या यह हैरान करने वाली बात नहीं है कि कुछ पापी हुतम: में डाले जाएंगे। हुतम: से अभिप्राय वे अत्यन्त सूक्ष्म और बारीक अणु हैं जो एक अर्ध-प्रकाशित कमरे में से गुज़र कर प्रकाश की किरण में तैरते हुए पाए जाते हैं।

प्रमाणित अरबी शब्दकोश में हुतम: के दो मूल अर्थ पाए जाते हैं। एक हुतम: है जिसका अर्थ किसी वस्तु को पीसना या टुकड़े-टुकड़े करना है। इस दूसरा हितम: जिसके अर्थ महत्त्वहीन छोटे कणों के हैं। जैसे हितम: किसी वस्तु को उसके सूक्ष्मतम कणों में तोड़ने को कहते हैं।

इन दोनों अर्थों का उचित तौर पर चरितार्थ उन सूक्ष्मतम कणों पर हो सकता है जिनका और अधिक विभाजन असंभव हो। आज से चौदह सौ वर्ष पूर्व एटम की कोई कल्पना मौजूद नहीं थी, परन्तु केवल हुतमा ही एक ऐसा शब्द है जिसे एटम का निकटतम पर्याय ठहराया जा सकता है। दूसरी ओर आवाज़ की दृष्टि से भी ये दोनों शब्द मिलते-जुलते हैं। मनुष्य अभी इस दावे पर हैरान है कि उसे हुतम: में झोंका जाएगा कि एक और पहले से भी अधिक आश्चर्यजनक दावा सामने आ जाता है।

शब्द हुत्म: का स्पष्टीकरण करते हुए पवित्र क़ुर्आन उसे एक ऐसी भड़कती हुई अग्नि ठहराता है जो ऐसे स्तम्भों में बन्द है जो खींच कर लम्बे किए गए हों। जब मनुष्य को इसमें झोंका जाएगा तो यह अग्नि पसलियों को क्षति पहुंचाए बिना सीधी हृदय पर लपकेगी। इस से प्रकट होता है कि अग्नि गुणवत्ता की दृष्टि से सामान्य अग्नि से बिल्कुल भिन्न होगी जो शरीर को जलाने से पूर्व ही दृश्य की गति को इस प्रकार बन्द कर देगी जैसे उसे रोकने वाली पसलियों का कोई अस्तित्व ही न हो। क़ुर्आन उतरने के समय निश्चय ही इस प्रकार की अग्नि की कोई कल्पना मौजूद नहीं थी।

यहां वर्णित व्याख्या ही आश्चर्यजनक नहीं, आगे आने वाला स्पष्टीकरण इससे भी अधिक आश्चर्यजनक है। जिस अग्नि का वर्णन किया गया है वह ऐसे स्तंभों में बन्द है जो खींच कर लम्बे किए गए हों तथा यह अग्नि मनुष्य पर ऐसे समय में आक्रमणकारी होगी जब उसका अनियंत्रित होना प्रारब्ध होगा।

यह छोटी सी सूरह आश्चर्यजनक बातों पर आधारित है। प्रथम यह वर्णन कि एक समय ऐसा आएगा जब मनुष्य छोटे-छोटे अणुओं में झोंक दिया जाएगा। फिर उन अणुओं का स्पष्टीकरण किया गया है और बताया गया है कि उनमें है क्या ? उनमें अग्नि है जो छोटे-छोटे सिलेण्डरों में बन्द है जिन की आकृति लम्बे तथा ऊंचे खंभों जैसी है।

छोटे अणुओं में झोंके जाने का यह अर्थ नहीं कि केवल एक मनुष्य उनमें डाला जाएगा अपितु यह शब्द व्यापक अर्थों में मानव जाति के लिए प्रयुक्त हुआ है और उनमें डाले जाने से अभिप्राय वह अज़ाब है जिसमें उसे डाला जाएगा जो उसका प्रारब्ध है। जब से मनुष्य को एटम का गुप्त रहस्य ज्ञात करके उसमें मौजूद असीम ऊर्जा का ज्ञान प्राप्त हुआ है यह बात समझने योग्य हो गई है। यही वह युग है जब बारीकतम अणुओं में छुपी हुई अग्नि बाहर निकलकर हज़ारों वर्ग मील क्षेत्र को अपनी लपेट में ले सकती है। उसकी चपेट में आने वाली प्रत्येक वस्तु मनुष्य सहित तबाह हो जाएगी। अत: वह यह बात जो आज से चौदह सौ वर्ष पूर्व अवास्तविक दिखाई देती थी उसे आज बच्चा-बच्चा जानता है।

आश्चर्य एवं अतिशयोक्ति भरा कोई भी मुहावरा उस भविष्यवाणी की श्रेष्ठता का हक़ अदा नहीं कर सकता। क्या यह वास्तविकता कम आश्चर्यजनक है कि उस युग के लोग इस छोटी सी सूरह अर्थात् 'अलहमज़ह' को समझने से असमर्थ रहे अन्यथा उसका प्रभाव हृदयों के बजाए उनके ईमान एवं आस्था पर होता। बुद्धि इस बात को स्वीकार नहीं करती कि ये महान भविष्यवाणियां उनके ध्यान का केन्द्र नहीं बन सकतीं। कदाचित उनका विचार हो कि इन आयतों का संबंध इस संसार की घटनाओं से नहीं, परलोक से है। बहुत से व्याख्याकारों ने इन आयतों की व्याख्या करने का प्रयास ही नहीं किया और जिन्होंने इस कठिन कार्य को अपने दायित्व में लिया वे यह कह कर उत्तरदायित्व से पृथक हो गए कि ये तो दोबारा जीवित हो जाने की बातें हैं। इस प्रकार उन समस्त भविष्यवाणियों के अर्थों पर विचार करने का प्रयत्न ही नहीं किया।

पश्चिम के पूर्वकालीन सेल (Sale) को भी حُطَمَہ (हुतमा) का शाब्दिक अनुवाद करने में कठिनाई का सामना करना पड़ा। उसने حُطَمَہ का शाब्दिक अनुवाद किए बिना केवल यह लिखा कि लोगों की एक बड़ी संख्या 'हुतमा' में डाली जाएगी। इस प्रकार उसने अंग्रेज़ी जानने वालों की उस संभावित अविश्वसनीयता को दूर कर दिया, जिस का मनुष्य के छोटे-छोटे कणों में डाले जाने के अनुवाद से पैदा होने की संभावना थी। अत: हुतमा के सही अर्थ ज्ञात न होने के कारण पाठक के मस्तिष्क में حُطَمَہ के अर्थ किसी बड़े कमरे में जलती हुए अग्नि के होते हैं। इस नीति ने सेल (Sale) को ग़लत अनुवाद से पैदा होने वाली लज्जा से तो बचा लिया, परन्तु वह इस महान भविष्यवाणी का हक़ अदा करने में विफल रहा।

इस आयत में कथित अग्नि का संबंध चाहे इस लोक से हो अथवा परलोक से, उसे किसी भी प्रकार सूक्ष्मतम कणों में बन्द नहीं किया जा सकता। चूंकि एटमी युग के विकास से पूर्व इस प्रकार की अग्नि की कोई कल्पना ही मौजूद नहीं थी। इसलिए सेल तथा अन्य पहले व्याख्याकारों को उसे हल करने में कठिनाई का सामना था। अन्तत: अब जाकर यह गुत्थी खुलती हुई दिखाई देती है, जिसकी समस्त कड़ियां एक दूसरे के साथ क्रमश: जुड़ी हुई हैं।

जब एक वैज्ञानिक दृष्टि से यह ज्ञात न हो कि एटमी धमाका किस प्रकार होता है और एटमी संख्या में क्या-क्या परिवर्तन होते हैं। पवित्र क़ुर्आन में वर्णित लम्बे खम्भों के अर्थ पूर्ण रूप से समझ में नहीं आ सकते। फटने से

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्बः जुमअः

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक मौके पर वास्तविक मोमिन की निशानी बताते हुए फरमाया कि वास्तविक मोमिन वही है जो जो चीज़ अपने लिए चाहता है वह अपने भाई के लिए, दूसरे के लिए चाहता है। एक ऐसा मार्गदर्शक सिद्धांत है जो दुनिया में हर स्तर पर घर से लेकर अंतर राष्ट्रीय संबंधों में प्यार मुहब्बत और सुलह की नींव डालता है। झगड़ों को समाप्त करता है दिलों में नरमी पैदा करता है। एक दूसरे के हक अदा करने की तरफ ध्यान दिलाता है।

मैंने कई अवसरों पर दूसरों के सामने यह बात रखी तो बड़े प्रभावित होते हैं लेकिन हमारा उद्देश्य केवल अच्छी बात बता कर लोगों को प्रभावित करना नहीं है बल्कि अपने व्यवहार से इस बात की और हर इस्लामी आदेश की सुन्दरता प्रमाणित करना भी है। हमें दूसरे सवाल कर सकते हैं कि बहुत अच्छी बात है लेकिन बताओ तुम में से कितने लोग इस पर अनुकरण करते हैं। जब अवसर आया तो स्वार्थ नहीं दिखाते। बात की सुंदरता तो उसी समय प्रकट होती है जब बात कहने वाला ख़ुद भी इस पर अनुकरण कर रहा हो।

हम जिस तरह अपने अधिकार लेने के लिए उत्सुक होते हैं दूसरे को अधिकार देने के लिए भी वही मानक स्थापित करने चाहिए। हम से कोई ग़लती हो जाए तो हम जब अपने लिए यह चाहते हैं कि हमारी ग़लती माफ हो और हम से कोई पूछताछ न हो, हमें सज़ा न मिले, तो फिर जब कोई दूसरा कोई ग़लती करता है जिससे हम प्रभावित हो रहे हों तो उसके लिए भी हमें, अगर वह कोई पक्का अपराधी नहीं है बार बार वह गलतियां नहीं दोहरा रहा, यही रवैया अपनाना चाहिए कि क्षमा कर दें। हां अगर किसी ग़लती से जमाअत या राष्ट्रीय हितों को नुकसान पहुंचा रहा हो तो फिर यह व्यक्तिगत ग़लती नहीं होती और उसका अपराध फिर क़ौमी अपराध बन जाता है और फिर ऐसे लोगों का फैसला भी संस्थाएं करती हैं, कोई व्यक्ति नहीं करता।

ग़ुस्सा पर काबू पाने, सबर करने और व्यर्थ बातों से रुकने के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश के हवाले से नसीहतें।

अल्लाह तआला ने हमें गुस्सा दबाने के बाद जो माफ करने के लिए कहा है तो बिना किसी हिक्मत के नहीं कहा कि माफ करते चले जाओ बल्कि माफी और सज़ा के हिक्मत बता कर फैसला करने के लिए कहा है।

अगर माफ करने से सुधार हो रहा है तो माफ करना बेहतर है। अगर सज़ा देना सुधार के लिए आवश्यक है तो हिक्मत की मांग यह है कि सज़ा दी जाए और फिर बेशक संबंधित संस्थाओं तक मामला ले जाया जाए।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आपने कुसूरवारों को माफ करने के अनुपमीय घटनाओं का ईमान वर्धक वर्णन।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 23 सितम्बर 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक मौके पर वास्तविक मोमिन की निशानी बताते हुए फरमाया कि वास्तविक मोमिन वही है जो जो चीज़ अपने लिए चाहता है वह अपने भाई के लिए, दूसरे के लिए चाहता है।(सुनन इब्न माजा किताबुज़्ज़ुहद बाब अल्वरअ अत्तक्वा हदीस 4217) एक ऐसा मार्गदर्शक सिद्धांत है जो दुनिया में हर स्तर पर घर से लेकर अंतर राष्ट्रीय संबंधों में प्यार मुहब्बत और सुलह की नींव डालता है। झगड़ों को समाप्त करता है दिलों में नरमी पैदा करता है। एक दूसरे के हक अदा करने की तरफ ध्यान दिलाता है।

मैंने कई अवसरों पर दूसरों के सामने यह बात रखी तो बड़े प्रभावित होते हैं लेकिन हमारा उद्देश्य केवल अच्छी बात बता कर लोगों को प्रभावित करना नहीं है बल्कि अपने व्यवहार से इस बात की और हर इस्लामी आदेश की सुन्दरता प्रमाणित करना भी है। हमें दूसरे सवाल कर सकते हैं कि बहुत अच्छी बात है लेकिन बताओ तुम में से कितने लोग इस पर अनुकरण करते हैं। जब अवसर आया तो स्वार्थ नहीं दिखाते। बात की सुंदरता तो उसी समय प्रकट होती है जब बात कहने वाला ख़ुद भी इस पर अनुकरण कर रहा हो। लोगों को हमारी विशिष्टता तो तभी पता चलेगी जब हमारी कथनी और करनी एक जैसी होंगी। लोग केवल बात सुनने तक नहीं रहते बल्कि हमें देखते भी हैं। मैंने जर्मनी के सफर के दौरान वहां आख़री जुम्अः पढ़ाया शायद इस में उल्लेख किया था कि जब मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर जर्मनी में क्षेत्र के ज़िला आयुक्त ने यह आपत्ति कि तुम लोग महिलाओं से हाथ न मिलाकर उनके साथ ग़लत रवैया दिखाते हो। तो जब मैंने उसे कुछ विस्तृत जवाब दिया तो एक व्यक्ति ने बाद में अपनी प्रतिक्रिया देते हुए यह भी कहा था कि बिल्कुल ठीक बात है हर एक को आज़ादी है और जो उसका धर्म कहता है या परंपराएं कहती हैं उस पर अनुकरण करना उस का अधिकार है जबकि देश या जनता का इससे नुकसान भी न हो रहा हो। कहने लगा लेकिन यह बात तो तुम्हारे ख़लीफा ने कही है लेकिन हकीकत तो तब पता चलेगी जब हम देखेंगे कि अहमदी युवा भी मानते हैं या नहीं, या उनकी बहुमत इस पर अनुकरण करती है या नहीं।

इसलिए जब हम धर्म के बारे में किसी आदेश और इस संबंध में उच्च नैतिकता की बात करते हैं तो दूसरे हमें देखते भी हैं कि उनका अपना अनुकरण कैसा है। इस बात से तो कोई इनकार नहीं कर सकता कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मोमिन की उच्च नैतिकता स्थापित करने के लिए बताई कि तुम्हारे वास्तविक मोमिन होने का तब पता चलेगा जब तुम्हारे आचरण भी उच्च होंगे तुम्हारी एक दूसरे के लिए भावनाएं और इहसास की गुणवत्ता के स्तर भी उंचे होंगे और वे स्तर क्या हैं? यह कि जो चीज़ तुम अपने लिए पसंद करो वह दूसरे के लिए पसंद करो। यह नहीं कि अपने अधिकारों को लेने के लिए इंसाफ इंसाफ की आवाज़ बुलंद करते रहो और दूसरों के अधिकार देते समय नकारात्मक व्यवहार दिखाओ।

इसलिए हम जिस तरह अपने अधिकार लेने के लिए उत्सुक होते हैं दूसरे को अधिकार देने के लिए भी वही मानक स्थापित करने चाहिए। हम से कोई ग़लती हो

जाए तो हम जब अपने लिए यह चाहते हैं कि हमारी ग़लती माफ हो और हम से कोई पूछताछ न हो, हमें सज़ा न मिले, तो फिर जब कोई दूसरा कोई ग़लती करता है जिससे हम प्रभावित हो रहे हों तो उसके लिए भी हमें, अगर वह कोई पक्का अपराधी नहीं है बार बार वह गलतियां नहीं दोहरा रहा, यही रवैया अपनाना चाहिए कि क्षमा कर दें। हां अगर किसी ग़लती से जमाअत या राष्ट्रीय हितों को नुकसान पहुंचा रहा हो तो फिर यह व्यक्तिगत ग़लती नहीं होती और उसका अपराध फिर क़ौमी अपराध बन जाता है और फिर ऐसे लोगों का फैसला भी संस्थाएं करती हैं, कोई व्यक्ति नहीं करता ।

बहरहाल मैं यह बात कर रहा हूँ कि समाज के दैनिक आपस के मामलों में जो हम अपने लिए हक समझते हैं वह हक दूसरे को भी देते हैं या नहीं या देने की हमारी सोच है या नहीं और इसमें बुनियादी इकाई घर है, दोस्त हैं, बहन भाई हैं, अन्य रिश्तेदार हैं। जब छोटे पैमाने पर अपने छोटे से क्षेत्र में यह सोच होगी तो समाज में व्यापक रूप में भी यही सोच फैलेगी। स्वार्थ साधन खत्म होंगे। अधिकार देने की बातें अधिक होंगी। माफ करने की प्रवृत्ति बढ़ेंगी। सज़ा देने या दिलवाने की प्रवृत्ति में कमी होगी और अल्लाह तआला ने कुरआन में भी बाहरी अधिकारों और ज़रूरतों का ख्याल रखने के साथ साथ माफ करने की प्रवृत्ति को भी अपनाने की ओर ध्यान दिलाया है। इसलिए अल्लाह कुरआन में फरमाता है। الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَ الضَّرَّآءِ وَ الْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَ الْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ وَ اللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ (आले इम्रान 135) अर्थात वे लोग समृद्धि में भी खर्च करते हैं और तंगी में भी और ग़ुस्सा दबा जाने वाले हैं और लोगों को क्षमा करने वाले हैं और अल्लाह एहसान करने वालों से प्यार करता है।

इसलिए पहले तो अल्लाह तआला ने इसमें अल्लाह तआला के इन बन्दों के हक अदा करने के लिए खर्च करने की ओर ध्यान दिलाया है जोकि आवश्यकता रखते हैं। मोहसिन तो है ही वह जो दूसरों के काम आने वाला हो, उन्हें लाभ पहुंचाने वाला हो, नेकियों पर क़ायम रहने वाला हो, तक्वा पर चलने वाला हो। इसलिए जो नेकियों पर क़ायम रहने वाला और दूसरों को अल्लाह तआला के लिए लाभ देने वाला और तक्वा पर चलते हुए लाभ पहुंचाने वाला हो नि:सन्देह वे अल्लाह के बन्दों के अधिकार अदा करने में स्वार्थ रहित होता है। छुपकर और स्पष्ट अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए खर्च करता है और जब यह स्थिति व्यक्ति में पैदा हो जाए तो वह फिर स्वार्थ साधन नहीं दिखाता। अपने भाई के लिए बुराई नहीं चाहता और ऐसे लोग आध्यात्मिक रूप से भी तरक्की करते हैं और ऐसे लोग फिर उन लोगों में शामिल हो जाते हैं जिन से अल्लाह प्यार करता है। फिर अल्लाह तआला फरमाता है कि मुहसनीन (उपकार करने वालों) की यह भी निशानी है कि वह अपनी भावनाओं पर भी नियन्त्रण रखने वाले हैं क़ाबू रखने वाले हैं और ऐसा नियन्त्रण जो न केवल ऐसी स्थिति में जबकि ग़ुस्सा आना स्वाभाविक बात है, क्रोध को दबाने वाले हैं बल्कि इस तरह भावनाओं में काबू रखते हैं और उसकी परीक्षा तब होगी जब ग़ुस्सा दबाने के बाद दूसरों को माफ करने की भी स्थिति पैदा हो। यह बात कोई मामूली बात नहीं है कि सभी प्रकार के ग़ुस्से और बदले की भावना को दिल से निकाल दिया जाए। यह बहुत बड़ी बात है। जब गुस्सा भी न आए और बदला लेने की भावना भी दिल से निकल जाए और न केवल इतना के क्रोध की भावनाओं को निकाल दिया जाए बल्कि ग़लती करने वाले पर कुछ एहसान भी कर दिया जाए। यह बहुत बड़ी बात है लेकिन अल्लाह चाहता है कि मोमिन में ये बातें पैदा हों।

रिवायतों में हज़रत हसन की एक घटना आती है कि आप के एक ग़ुलाम ने कोई भूल की। इस पर आप को उस पर बड़ा ग़ुस्सा आया और सज़ा देना चाहते थे उस पर उस ग़ुलाम ने आयत का भाग पढ़ा कि وَالْكَاظِمِيْنَ الْغَيْظَ और वह जो ग़ुस्सा दबाते हैं। इस पर हज़रत हसन ने सज़ा देने के लिए जो हाथ उठाया था उसे नीचे गिरा लिया या हाथ नहीं उठाया। इस पर ग़ुलाम को और साहस पैदा हुआ तो उसने कहा। وَالْعَافِيْنَ अर्थात ऐसे लोग लोगों को माफ करने वाले भी होते हैं। इस पर हज़रत हसन ने अल्लाह तआला के आदेश के अनुसार कहा कि जाओ मैंने तुम्हें माफ किया। इस बात पर ग़ुलाम को अधिक साहस पैदा हुआ तो उसने कहा कि وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ कि अल्लाह तआला दया करने वालों से प्यार करता है इस पर उन्होंने ग़ुलाम को कहा कि जाओ मैंने तुम्हें मुक्त किया। जहां जाना चाहते हो जाओ।

(उद्धरित मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 179-180 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अत: अल्लाह के प्यार की इच्छा रखने वालों और अल्लाह तआला से डरने करने वालों के ये व्यवहार होते हैं कि न केवल दोषी की ग़लती माफ कर दें उस पर दया कर दें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस आयत के बारे में एक जगह फरमाते हैं कि

"याद रखो जो सख्ती करता है और क्रोध में आ जाता है उसकी ज़बान से मआरिफ़ और ज्ञान की बातें कभी नहीं निकल सकतीं। वह दिल ज्ञान की बातों से वंचित किया जाता है जो अपने प्रतिद्वंद्वी के सामने जल्दी क्रोध में आकर सीमा से बाहर हो जाता है। गंदा बोलने वाला मुंह और बेलगाम के होंठ गूढ़ भेद की बातों के स्रोत से बेनसीब और वंचित किए जाते हैं। (जो गालियां निकालने वाला है। बेलगाम बोलने वाला है, जो एसी बातें जो हिक्मत की बातें हैं, जो गहरी बातें हैं जो अल्लाह तआला की पसंदीदा बातें हैं उन से वंचित हो जाता है।) फरमाया "क्रोध और हिक्मत दोनों जमा नहीं हो सकते। जो बहुत अधिक क्रोधी होता है उसकी बुद्धि मोटी और समझ मंद होती है उसे कभी किसी विभाग में प्रभुत्व और सहायता नहीं दी जाती। गज़ब आधा जुनून है जब यह अधिक भड़कता है तो पूरा जुनून हो सकता है।

(मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 126-127 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर आप फरमाते हैं कि "याद रखो कि बुद्धि और जोश में ख़तरनाक दुश्मनी है।" (बुद्धिमान व्यक्ति में बेवजह का जोश पैदा नहीं होता जो ग़ुस्सा का जोश है।) फरमाया कि "जब जोश और ग़ुस्सा आता है तो बुद्धि कायम नहीं रह सकती लेकिन जो धैर्य करता है और विवेक का नमूना दिखाता है उसे एक नूर दिया जाता है जिससे उसकी बुद्धि और चिंता की ताकतों में एक नई रोशनी पैदा हो जाती है और फिर नूर से नूर पैदा होता है। ग़ुस्सा और जोश की हालत में चूंकि मन तथा बुद्धि अंधेरे में होते हैं इसलिए फिर अंधेरे से अंधेरा पैदा होता है।"

(मल्फूज़ात भाग 3 पृष्ठ 180 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अत: इस्लाम की शिक्षा बड़ी बुद्धि वाली है कि अगर ग़लती कर दी जाए तो फैसला करते समय अगर इंसान किसी चीज़ के ख़िलाफ भी हो, किसी व्यक्ति के ख़िलाफ भी हो, कोई सज़ा ऐसा मामला हो तब भी सोच समझकर फैसला करना चाहिए न कि क्रोध के अधीन होकर। कुछ जगह सख्ती करनी पड़ती है लेकिन क्रोध में आकर ग़ुस्सा में आकर सख्ती करना उचित नहीं है। इस्लाम में दंड की अवधारणा है लेकिन इसके लिए नियम-कानून हैं। क्रोध में आकर सज़ा हिक्मत से दूर ले जाती है। न्याय से दूर ले जाती है। इसलिए आपने फरमाया कि क्रोध में आकर अगर सज़ा दोगे तो यह दिल की सख्ती बन जाएगी और जब मन कठोर हो जाएं तो मआरिफ़ और ज्ञान की बातें मुंह से नहीं नकलतीं बल्कि बुद्धि मारी जाती है। इसलिए अल्लाह तआला ने आदेश दिया है कि ग़ुस्सा दबाओ। दिमाग़ को शांत करो। फिर सज़ा देने या न देने का फैसला करो बशर्ते उसका अधिकार भी रखते हो। यह नहीं कि प्रत्येक को उठ कर सज़ा देने का अधिकार मिल गया। क्रोध को दबाने के लिए धैर्य का गुण होना आवश्यक है। इसलिए धैर्य के मानकों को बढ़ाने की जरूरत है। आपने फरमाया कि सबर करने वालों की बुद्धि व फ़िक्र की ताकतों को प्रकाश मिलता है उनके विचार मज़बूत होते हैं उन्हें अल्लाह तआला की तरफ से प्रकाश मिलता है। उन्हें अल्लाह तआला से भी मार्गदर्शन मिलता है। अगर एक मोमिन किसी भी बात का बुद्धि से कोई फैसला करने वाला हो चाहे अवांछित बात हो। तो उनके निर्णय में जल्दबाज़ी नहीं होती बल्कि धैर्य से सोच समझ के निर्णय करते हैं बल्कि सकारात्मक और नकारात्मक पहलू देख कर विस्तार में जाकर फिर निर्णय होते हैं।

यह भी स्पष्ट हो जैसा कि मैंने कहा कि सज़ा देने का अधिकार भी प्रत्येक को नहीं है। यह कह दें कि मैंने सोचा और मेरी बुद्धि सज़ा देने को कहती है इसलिए सज़ा देता हूं। सज़ा देना तो अब इस युग में प्रासंगिक संस्थाओं का काम है। माफ तो इंसान दरअसल अपने दोषी को ख़ुद कर सकता है लेकिन सज़ा देने के लिए बहरहाल कानून की मदद चाहिए या संबंधित संस्था की मदद चाहिए। इस बात को अगर मनुष्य हर समय सामने रखे तो आपस में छोटी-छोटी बातों पर जो लड़ाई हो रही होती हैं वे न हों। एक दूसरे पर मुकदमा बाज़ी करके जो समय और धन की बर्बादी हो रही होती है वह न हो। अगर मुकदमा अदालत में ले जाने पर अदालत किसी एक दोषी को माफ करती है तो दूसरे पक्ष का क्रोध अधिक भड़कता है कि माफ क्यों कर दिया या उसे कम सज़ा क्यों दी गई और वह अगली अदालत में मुकदमा ले जाता है और मामले भी ऐसे नहीं होते कि कोई बड़े भयानक हों। बड़े छोटे मामले होते हैं। क़ज़ा में भी ऐसे मामले आते हैं और कुछ अहमदी यह भी कहते हैं कि हम ने कज़ा से फैसला नहीं करवाना अदालत में चले जाते हैं हालांकि कोई ऐसी बात नहीं होती वह जिस पर मुकदमा बाज़ियाँ की जाएं और इसलिए वे अपना नुकसान कर रहे होते हैं। अल्लाह तआला ने हमें गुस्सा दबाने के बाद जो माफ करने के लिए कहा है तो बिना किसी हिक्मत के नहीं कहा कि माफ करते चले

जाओ बल्कि माफी और सज़ा के हिक्मत बताकर फैसला करने के लिए कहा है। तो अल्लाह तआला फरमाता है कि

وَ جَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَ اَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ (अश्शूरः 41)

وَ جَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا और बुराई का बदला की जाने वाली बुराई के बराबर होता है अत: जो कोई माफ करे बशर्ते कि वे सुधार करने वाला हो तो उसका इनाम अल्लाह तआला पर है। बेशक वे अत्याचारियों को पसंद नहीं करता।

अत: वास्तविक चीज़ अपराधी को उस के अपराध का एहसास दिलाकर सुधार करना है न कि बदला लेना, मुकदमा बाज़ियों में फंसाना, अपना भी पैसा बर्बाद करना और दूसरे का भी पैसा बर्बाद करवाना। अपना भी समय बर्बाद करना और दूसरे का समय भी बर्बाद करवाना और अगर जमाअत की संस्थाओं में बात है तो उन पर कुधारणा करना। अगर माफ करने से सुधार हो रहा है तो माफ करना बेहतर है। अगर सज़ा देना सुधार के लिए आवश्यक है तो हिक्मत की मांग यह है कि सज़ा दी जाए और फिर बेशक संबंधित संस्थाओं तक मामला ले जाया जाए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस हिक्मत वाले आदेश के बारे में कई जगह वर्णन किया है। एक जगह आप तिरयाकुल कुलूब में फरमाते हैं कि

"न्याय की दृष्टि से प्रत्येक बुराई की सज़ा उतनी ही बुराई है लेकिन अगर कोई व्यक्ति अपने गुनहगार को माफ कर दे बशर्ते कि इस माफ करने में अपराधी व्यक्ति का सुधार हो न कि माफ करने से और भी अधिक साहसी हो और मुखर हो तो ऐसा व्यक्ति ख़ुदा तआला से बड़ा इनाम पाएगा।" अर्थात माफ करने वाला इनाम पाएगा।

(तिरयाकुल कुलूब रूहानी ख़ज़ायन भाग 15 पृष्ठ 163)

फिर बराहीने अहमदिया में आप फरमाते हैं कि

"बुराई के बदले में न्याय का सिद्धांत तो यही है कि बुराई करने वाला आदमी उतनी ही बुराई का सज़ावार है जितनी उसने बुराई की है। परन्तु जो व्यक्ति क्षमा करके कोई सुधार का काम करे अर्थात ऐसी क्षमा न हो जिसका परिणाम कोई त्रुटि हो अत: उसका इनाम ख़ुदा पर है।"(बराहीन अहमदिया रूहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 433-434 हाशिया नम्बर 3) अर्थात माफ करना सुधार के लिए हो तो बड़ी अच्छी बात है और विवरण इस का यह है कि ऐसी माफी से ख़राबी पैदा न हो। यदि कोई त्रुटि उत्पन्न नहीं होती तो अल्लाह तआला फरमाता है कि माफ करने वाले को जो इनाम मिलेगा वह ख़ुदा तआला के पास है जितना चाहे दे दे।

इसलिए क्षमा और माफ करना उस समय है जब दोषी का व्यवहार दिखाई देता हो कि वह भविष्य में यह ग़लत काम नहीं करेगा। कुछ आदी अपराधी होते हैं और हर बार जुर्म करके माफी मांगते हैं ऐसे लोगों के लिए सज़ा ज़रूरी होती है और सज़ा फिर इस तरह हो कि उस में से भी सुधार का पहलू निकलता हो।

फिर एक जगह आपने फरमाया कि

"बुराई के बदला उतना ही बुराई है जो की गई लेकिन जो व्यक्ति क्षमा करे और गुनाह क्षमा कर दे और क्षमा से कोई सुधार पैदा होता हो, न कोई त्रुटि तो ख़ुदा उससे प्रसन्न है और उसे उसका बदला देगा अत: कुरआन की दृष्टि से हर जगह बदला लेना प्रशंसनीय नहीं है।" (अर्थात न बदला लेना हर जगह आवश्यक है और प्रशंसा के योग्य है) "और न हर जगह क्षमा सराहनीय है। (न माफ करना सराहनीय है) "बल्कि स्थान की पहचान करनी चाहिए।" (यह देखना चाहिए कि अवसर कैसा है लाभ किस में है।? सज़ा या माफी में।) "और चाहिए कि बदला और क्षमा की आदत स्थान और अवसर के अनुसार हो। न स्वतंत्र रूप में। यही कुरआन का अभिप्राय है।" (किश्तू नूह , रूहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ 30)

यह कोई नहीं है कि किसी नियम के बिना सज़ा दी जाए या बेवजह माफ कर दिया जाए। इसके लिए कोई सीमाएं हैं। इन सीमाओं के अंदर रहना चाहिए और यह चीज़ देखनी चाहिए कि लाभ किस में है। तो यह है इस्लामी सज़ा और माफी की हिक्मत कि सुधार उद्देश्य हो।

आजकल सांसारिक कानून में हम देखते हैं कि हर जुर्म की सज़ा दी जाती है और फिर जेलों में इसलिए रखा जाता है कि सुधार हो लेकिन ख़ुद यहां के विकसित देशों के भी विश्लेषक अब लिखने लग गए हैं कि जेलों में जब अपराधी सज़ा काट के निकलते हैं तो अपराधों में और भी बढ़े हुए होते हैं क्योंकि सज़ा देने वाले भी और दोषी भी केवल कानून की पाबंदी कर रहे होते हैं। अल्लाह तआला का डर उन्हें नहीं होता। बहरहाल मोमिनों को सामान्य मार्गदर्शन यही है कि इनमें अपराधों को माफ करने की आदत होनी चाहिए और दोष की प्रकृति और दोषी की स्थिति और पिछले व्यवहार के अनुसार फैसला होना चाहिए। न अल्लाह तआला यह चाहता है कि आँखें बंद करके प्रत्येक को माफ करते चले जाओ न कि उग्र होकर सज़ाएं देने की ओर ही ध्यान हो। माफ करते चले जाने से भी समाज में बिगाड़ पैदा होता है और सज़ा देते चले जाने से भी रनजिशें और द्वैष बढ़ते हैं और समाज में घृणा की दीवारें खड़ी होती हैं और अशांति फैलती चली जाती है।

अगर हम अपने परिवेश पर नज़र डालें, समीक्षा करें तो हमें दिखाई देता है कि वे लोग जिनका कुसूर किया गया हो वे इस बात की तीव्रता से अभिव्यक्ति और मांग करते हैं कि अपराधी को सज़ा देनी चाहिए ताकि दूसरों के लिए यह सज़ा इबरत का माध्यम बने और किसी को किसी प्रकार की त्रुटियों का साहस न हो और दोषी जिस ने दोष किया हो, वह यह कहता है कि माफ करना चाहिए। आजकल ह्यूमन राइट्स के संगठन भी बहुत से बन गए हैं। जहां वह कुछ अच्छा काम कर रहे हैं वहां माफ करवाने में भी बहुत अधिक जोश से काम लेते हुए प्रत्येक दोषी को माफ करवाने की कोशिश करते हैं। इसी तरह जो दोषी धर्म और अल्लाह तआला के आदेश के कुछ सुध बुध रखते हैं वे भी कहते हैं कि अल्लाह का हुक्म है कि माफ करो इसलिए माफ करना चाहिए क्योंकि ख़ुदा खुद भी बन्दों को माफ करता है। इसलिए तुम भी बन्दों का हक़ अदा करते हुए माफ करो। व्यक्तिगत रूप से भी हर एक अपने दोषी को माफ करे और जमाअत में भी प्रत्येक को माफ किया जाए चाहे भले इससे जमाअत को फायदा हो रहा है या नुकसान ताकि बन्दों के हक़ अदा हों। दोनों तरफ से ये बातें करने वाले जो बढ़ बढ़कर बातें करते हैं या तो आदी अपराधी होते हैं या इंसाफ से हट कर अपने पक्ष में फैसला करवाना चाहते हैं। एक तो जुर्म करते हैं फिर जुर्म की सज़ा से बचने के लिए अल्लाह तआला के आदेश का नाजयज़ उद्धरण देते हैं। ये लोग स्वार्थी होते हैं। अगर उनका कोई कसूर करे तो कभी माफ नहीं करते बल्कि बढ़-चढ़ कर दोषी को सज़ा दिलवाने की कोशिश करते हैं, मानो उनका सिद्धांत यहाँ बदल जाता है। उस समय इस आदेश को भूल जाते हैं कि दूसरे के लिए भी वही पसंद करो जो अपने लिए पसंद करते हो।

इसी तरह जो माफ नहीं करना चाहते हैं और चाहते हैं कि निश्चित रूप से मेरे दोषी को दंडित करो वे भी अगर अपना मामला हो तो माफियाँ मांग कर कहेंगे कि माफ करना अच्छा है। इस्लाम ऐसे स्वार्थियों की बातों को अस्वीकार करता है और अत्यधिक न्यायपूर्ण निर्णय देता है कि अगर यह विश्वास है कि माफ करने से सुधार होगा तो बेहतर है कि माफ कर दो। अगर यह बात साफ नज़र आती है कि सज़ा के बिना गुजारा नहीं तो सज़ा ज़रूरी है। बहरहाल यह तो इस्लाम की एक सैद्धांतिक शिक्षा है।

अब हम देखते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किस सीमा तक माफ किया करते थे और आपने सहाबा को इस बारे में क्या नसीहतें फरमाई हैं। हज़रत इमाम हसन का मैंने उदाहरण दिया था कि उन्होंने अपने कर्मचारी की एक ग़लती पर माफ कर दिया लेकिन वह एक छोटी सी ग़लती थी। माफ करने की चरम सीमा तो हमें आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन में दिखती है कि जिन लोगों की सज़ा के फैसले भी हो गए थे लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें भी माफ कर दिया। किसी दूसरे के दोषियों को माफ नहीं किया बल्कि अपने दोषियों को, अपने बच्चों के हत्यारों को माफ कर दिया क्योंकि उनका सुधार हो गया था।

रिवायतों में एक घटना आती है कि एक व्यक्ति हब्बार पुत्र असवद ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुपुत्री हज़रत ज़ैनब पर मक्का से मदीना हिजरत करते समय भाले से कातिलाना हमला किया। आप इस समय गर्भवती थीं। हमले के कारण से आपका गर्भ भी नष्ट हो गया। घायल भई हुईं और चोट के कारण आप की मृत्यु हो गई। इस अपराध के कारण हब्बार के लिए हत्या की सज़ा का फैसला हुआ। फतेह मक्का के अवसर पर यह व्यक्ति भाग कर कहीं चला गया मगर बाद में जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना वापस आए तो हब्बार आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि रहम की भीख माँगता हूँ। पहले मैं आप से डर कर भाग गया था लेकिन मुझे आप की क्षमा और दया वापस ले आई है। हे ख़ुदा के नबी! हम अज्ञान थे, मुशरिक थे, ख़ुदा ने हमें आपके द्वारा हिदायत दी और मौत से बचाया। मैं अपने अपराधो को स्वीकार करता हूँ अत: मेरी अज्ञानता से मुंह मोड़ते हुए मुझे माफ कीजिए। अत: आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी पुत्री के इस हत्यारे को माफ कर दिया और फरमाया कि जा हे हब्बार! मैंने तुझे माफ किया और फिर कहा कि अल्लाह तआला का यह उपकार है कि उस ने तुम्हें इस्लाम स्वीकार करने की शक्ति दे दी है। अत: जब आपने देखा कि सुधार हो गया है तो अपनी बेटी के हत्यारे को

माफ कर दिया।

(तारीख़ल ख़मीस भाग 2 बाब जिक्रुर्रिजाल अशरल्लज़ीन यौमे फत्ह मक्का पृष्ठ 93 प्रकाशन मूससतह शअबान बैरूत)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो अन्हा फरमाती हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने ऊपर होने वाले किसी दुर्व्यवहार का बदला कभी नहीं लिया।

(सहीह मुस्लिम किताबुल फज़ायल हदीस 5944)

तभी तो आप ने खाने में ज़हर मिलाकर खिलाने वाली यहूदिया को भी माफ कर दिया था हालांकि कुछ सहाबा को ज़हर का असर भी हो गया था।

(सीरत इब्ने हश्शाम पृष्ठ 626-627 प्रकाशन अल्मक्तबत: अल्असरिया बैरूत)

फिर हिन्द जिस ने जंगे उहद में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चाचा हज़रत हमज़ा का मुसलह किया था उनके शरीर के अंग काटे थे। कान नाक आदि काटे थे और कलेजा निकालकर चबाया था। फत्ह मक्का के अवसर पर महिलाओं के साथ मिलकर उसने बैअत कर ली। उसके कुछ सवालों की वजह से आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे पहचान लिया और पूछा कि क्या तुम अबू सुफ़यान की पत्नी हिन्द हो।? उसने कहा हाँ या रसूलल्लाह ! अब तो मैं दिल से मुसलमान हो चुकी हूँ। जो पहले हो चुका उसे माफ करें। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हिन्द को क्षमा कर दिया। हिन्द पर आप की क्षमा का ऐसा प्रभाव हुआ कि उसकी बिल्कुल काया पलट गई। बहुत गंभीर हो गई बल्कि उसी दिन शाम को उस ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दावत दी और दो बकरे भूनकर खाने के लिए भिजवाए और साथ यह भी कह दिया कि आजकल जानवर कम हैं इसलिए तुच्छ सा उपहार प्रस्तुत है। इस पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुआ की कि हे अल्लाह! हिन्द के झुंड में बहुत बरकत डालना। अत: कहते हैं कि इस दुआ के परिणाम से ऐसी बरकत पड़ी कि इसके झुंड संभाले नहीं जाते थे।

(सीरतुल हलबिया भाग 3 पृष्ठ 137-138 प्रकाशक दारुल कुतुब बैरीत 2002 ई)

रईसुल मुनाफकीन अब्दुल्ला बिन अबी बिन सलोल को प्रत्येक जानता है। उसकी सारी गुस्ताख़ियों के बावजूद उसे माफ किया और उसका जनाज़ा भी पढ़ा दिया। बावजूद इसके कि उमर बार बार निवेदन करते थे कि उसका जनाज़ा न पढ़ाएं। (सहीह बुख़ारी किताबुल जनायज़ हदीस 1366)

काब बिन ज़हीर एक प्रसिद्ध कवि था कुछ बातों की वजह से उसके लिए भी सज़ा का हुक्म हो चुका था। फत्ह मक्का के बाद उसके भाई ने उसे लिखा कि अब आकर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से माफी मांग लो तो वह मदीना आकर अपने एक जानने वाले के पास ठहर गया और सुबह नमाज़ मस्जिद नबवी में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पीछे अदा की। नमाज़ के बाद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि हे रसूलल्लाह ! काब बिन ज़हीर तौबा कर के आया है और माफी का इच्छुक है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसे पहचानते नहीं थे इसलिए उस ने कहा कि अगर इजाज़त हो तो उसे पेश किया जाए। आपने कहा कि हां आ जाए सामने। इस पर उसने कहा कि हे रसूलल्लाह! में ही काब बिन जहीर हूँ। इस पर एक अंसारी उसे कत्ल करने के लिए उठे क्योंकि इस के बारे में हद लगने की वजह कत्ल का फैसला हो चुका था तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि यह माफी का इच्छुक होकर आया है इसे छोड़ दो। इसके बाद उसने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में एक क़सीदा पेश किया जिस पर आप ने ख़ुशी व्यक्त की और अभिव्यक्ति कहते हुए अपनी चादर भी उसे ओढ़ा दी।

(तारीख़ल ख़मीस भाग 2 बाब इस्लाम काब बिन ज़हीर पृष्ठ 121 प्रकाशन मूससतह शअबान बैरूत)

तो यह था आप की माफी का स्तर कि न केवल माफ करते थे बल्कि पुरस्कार देकर दुआएं देकर विदा करते थे। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क्षमा के अनगिनत उदाहरण हैं ऐसे मेराज पर पहुंचा हुआ क्षमा है कि आदमी हैरान रह जाता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"ख़ुदा के प्यारों को बड़ी बड़ी गालियां दी गईं। बहुत बुरी तरह सताया गया मगर उन्हें اَعۡرِضۡ عَنِ الۡجَاهِلِيۡنَ अर्थात जाहिलों से मुंह फेरने का ही आदेश हुआ। ख़ुद उस सम्पूर्ण इंसान हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बहुत बुरी तरह कष्ट दिए गए और गालियां अपमान और शेखियां की गईं मगर इस साक्षात आचरण की मूर्ती ने इसके मुकाबला में क्या किया। उनके लिए दुआ की और चूंकि अल्लाह तआला ने वादा किया था कि जाहिलों से मुंह फेरेगा तो तेरी इज़्ज़त और जान को हम सही और सुरक्षित रखेंगे और यह बाज़ारी आदमी उस पर हमला न कर सकेंगे तो ऐसा ही हुआ कि हुज़ूर के विरोधी आप के सम्मान को कम न कर सके और ख़ुद ही अपमानित होकर आप के कदमों पर गिरे या सामने तबाह हो गए।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 103)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने साथियों को क्षमा और माफ करने के किन मापदण्डों को प्राप्त करने की नसीहत फरमाई। इस बारे में रिवायतों में कई घटनाएं मिलती हैं एक दो प्रस्तुत करता हूँ।

एक बार एक व्यक्ति रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मेरा एक ग़ुलाम है जो ग़लत काम करता है क्या मैं इसे शारीरिक सज़ा दे सकता हूँ।? आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम उससे प्रतिदिन सत्तर बार क्षमा कर लिया करो।(मजमउज़्ज़वायद भाग 4 पृष्ठ 309 किताबुल अतक हदीस 7231 प्रकाशक दारुल कुतुब अल्मिया बैरूत) अर्थात बहुत ज्यादा माफ किया करो। इसलिए नौकरों और अधीनस्थों से अच्छे व्यवहार का यह वह मानक है जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने निर्धारित किया।

यहां यह भी स्पष्ट कर दूं कि आजकल ग़ुलामी नहीं है और एक मोमिन कर्मचारी से भी यह उम्मीद की जाती है कि वह उस के ज़िम्मे जो उसके कर्तव्य हैं उनका भी हक़ देने वाला हो सिर्फ इसलिए कि दरगुज़र का आदेश है इसलिए हर काम ख़राब करता जाए यह भी ग़लत बात है। जिस तरह प्रकार और स्थानों पर भी आदेश है कि जो काम जिस किसी के ज़िम्मा किया गया है उसके अदा करने का भी पूरा हक अदा करना चाहिए। इसलिए दोनों और यह आदेश है जहां मालिक है कि छोटी-छोटी बातों पर नाराज़ न हो क्षमा करे। वहां कर्मचारी के लिए भी यही है कि मेरे ज़िम्मे जो ज़िम्मेदारी है उन का भी पूरा हक़ अदा करे।

क्षमा और माफ करने के बारे में हमें समझाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"इस जमाअत को तैयार करने से उद्देश्य यही है कि ज़बान, कान, आंख और प्रत्येक अंग में तक्वा आ जाए। तक्वा का नूर उसके अंदर और बाहर हो। उत्तम चरित्र का उच्च नमूना हो और व्यर्थ क्रोध और ग़ुस्सा आदि बिल्कुल न हो।" फरमाया कि "मैंने देखा है कि जमाअत के अक्सर लोगों में गुस्सा की कमज़ोरी अभी तक है। थोड़ी थोड़ी सी बात पर वैर और द्वेष पैदा हो जाता है और आपस में लड़ झगड़ पड़ते हैं। ऐसे लोगों का जमाअत में से कुछ हिस्सा नहीं होता और मैं नहीं समझ सकता कि इसमें क्या दिक्कत पेश आती है कि अगर कोई गाली दे तो दूसरा चुप रहे और जवाब न दे। हर एक जमाअत का सुधार प्रथम चरित्र से शुरू हुआ करता है। चाहिए कि शुरुआत में धैर्य से तरबियत में तरक्की करे और सब से उत्तम विचार यह है कि अगर कोई निन्दा करे तो उसके लिए दिल की गहराई से दुआ करे।"(धैर्य से पहली अपनी तरबियत करो और दूसरे की तरबियत भी करो तो उस के लिए माध्यम यह है कि दुआ करो।) कि अल्लाह तआला उस का सुधार कर दे और दिल में वैर को हरगिज़ न बढ़ाए। फरमाया "ख़ुदा तआला कभी पसंद नहीं करता कि नम्रता और धैर्य और क्षमा जो कि उत्कृष्ट गुण हैं उनकी जगह दरिंदगी हो। अगर तुम इन उत्तम गुणों में तरक्की करोगे तो बहुत जल्द ख़ुदा तक पहुँच जाओगे।" फरमाया " यह सच है कि सब इंसान एक स्वभाव के नहीं होते।(स्वभाव भिन्न होते हैं।) इसीलिए कुरआन शरीफ में आया है कि كُلٌّ يَّعۡمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ (बनी इस्राईल: 85)(अर्थात प्रत्येक अपनी प्रकृति के अनुसार काम करता है।) परन्तु आप फरमाते हैं कि "कुछ आदमी एक प्रकार के आचरण में अगर उत्कृष्ट हैं, तो अन्य किस्म में कमज़ोर। अगर एक आचरण का रंग अच्छा है तो दूसरे का बुरा।" फरमाया "लेकिन इस लिए इससे यह अनिवार्य नहीं है कि सुधार असंभव है।"

(मल्फूज़ात भाग 7 पृष्ठ 127-128 संस्करण 1985 ई य. के)

तबीयतें प्रत्येक की अल्लाह तआला ने बनाई हैं। कुछ के चरित्र अच्छे हैं इस में तरक्की करते हैं लेकिन दूसरे में कमज़ोरी है लेकिन फरमाया इस से यह अभिप्राय नहीं कि सुधार संभव नहीं और सारे चरित्र न अपनाए जाऐं।

अत: वास्तव में मनुष्य की तबीयतें अलग हैं। जिनमें कमज़ोरियां हैं उनमें कुछ अच्छाइयां भी हैं यह नहीं कि हर एक किसी में केवल कमज़ोरियां ही कमज़ोरियां हैं और अच्छाई कोई नहीं अच्छाइयां भी हैं कमज़ोरियां भी हैं लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमसे चाहते हैं कि अल्लाह तआला की आज्ञाओं पर चलते हुए हमें अपने सुधार की कोशिश करनी चाहिए और वे उच्च नैतिकता अपनानी चाहिए जो एक वास्तविक मोमिन का मापदंड हैं। कमज़ोरियों को दूर करने की

हमेशा कोशिश करते रहना चाहिए और इस बात की कोशिश होनी चाहिए कि हम अपने परिवेश को शांति वाला बनाने की कोशिश करें और उसके लिए जो सिद्धांत आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो अपने लिए पसंद है या अपने लिए चाहते हो वह अपने भाई के लिए भी चाहो।

अल्लाह तआला हमें यह तौफ़ीक़ प्रदान करे कि हम इन मानकों को प्राप्त करने वाले हों।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

पूर्व एटमी संख्या की अवस्था को एटमी विशेषज्ञ इस प्रकार वर्णन करते हैं जैसे कोई वस्तु अपने अन्दर मौजूद अत्यन्त दबाव के कारण फट पड़ने वाली हो। यह दबाव एटम के केन्द्र के फटने से पूर्व उसके फैलने के कारण पैदा होता है। इस प्रक्रिया में एक बड़े एटमी भार वाला तत्त्व कम एटमी भार वाले दो तत्त्वों में विभाजित हो जाता है। नए बनने वाले तत्त्वों के एटमी भार का योग प्रारंभिकि तत्त्व (Parent Element) जो Heavy Metal भी कहलाता है के एटमी भार से कुछ कम होता है। इस प्रक्रिया में एटमी भार का जो साधारण सा भाग नष्ट होता है वह ऊर्जा में परिवर्तित हो जाता है। एटम बम का यही एक अकेला माडल नहीं है किन्तु हमने लम्बे खंभों की क्रिया को वर्णन करने के लिए यह आसान माडल चुना है।

अब हम इस बात को स्पष्ट करते हैं कि अग्नि सीधे तौर पर हृदयों पर किस प्रकार लपकेगी। इस का विवरण निम्नलिखित है -

एटमी धमाके के समय गामा किरणें (Gamma Rays), न्यूट्रान्ज़ (Neutrons) और एक्स रेज़ (X-Rays) की एक बहुत बड़ी मात्रा बाहर निकलती है। एक्सरेज़ तापमान को तुरन्त नितान्त तौर पर बढ़ा देती हैं। परिणामस्वरूप अग्नि का बड़ा सा गोला बनता है जो अत्यन्त गर्म हवाओं के कंधों पर तीव्रता के साथ ऊंचा होना आरंभ हो जाता है। यह बहुत बड़ी कुकरमुत्ते के समान अग्नि की छतरी मीलों दूर से दिखाई देती है।

एक्सरेज़, न्यूट्रान्ज़ के साथ समस्त अंतरिक्ष की दिशाओं में भी फैल जाती हैं और अपने ताप के कारण मार्ग में मौजूद समस्त वस्तुओं को जला कर राख कर देती हैं। इन गर्म लहरों की गति आवाज़ की गति से कहीं अधिक है, जिनसे Shockwaves भी बनती हैं परन्तु इनसे भी कहीं अधिक तेज़ और प्रवेश करने वाली गामा रेज़ हैं जो प्रकाश-गति से यात्रा करते हुए उन गर्म लहरों को मात दे देती हैं। ये अत्यन्त कम्पनशील होती हैं और इसी कम्पन के कारण हृदयों की गति को बन्द कर देती हैं। अचानक मृत्यु एक्सरेज़ से पैदा होने वाली ताप की बजाए गामा किरणों की भीषण ऊर्जा के परिणामस्वरूप होती है। पवित्र क़ुर्आन ने इस विषय को बिल्कुल इसी प्रकार वर्णन किया है -

फिर सूरह 'अद्दुख़ान' में पवित्र क़ुर्आन ऐसे घातक बादल का वर्णन करता है जो विनाशकारी चमकदार धुएं पर आधारित होगा :-

فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ يَّغْشَى النَّاسَ ؕ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ

(अद्दुख़ान 44 : 11-12)

अनुवाद - अत: प्रतीक्षा कर उस दिन की जब आकाश एक स्पष्ट धुआं लाएगा जो लोगों को ढक लेगा। यह एक बहुत पीड़ादायक अज़ाब होगा।

निम्नलिखित आयतें उस धुएं के प्रकार पर अतिरिक्त प्रकाश डालती हैं :-

اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى ظِلٍّ ذِىْ ثَلٰثِ شُعَبٍ لَّا ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِىْ مِنَ اللَّهَبِ اِنَّهَا تَرْمِىْ بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ

(अलमुरसलात 77 : 30-34)

अनुवाद - उस की ओर चलो जिसे तुम झुठलाया करते थे, ऐसी छाया की ओर चलो जो तीन शाखाओं वाली है, न संतोषजनक है न अग्नि की लपटों से बचाती है। निश्चय ही वह एक क़िले की तरह की ज्वाला (शोला) फेंकती है जैसे वह जोगिया रंग के ऊंटों के समान है।

यहां اِنْطَلِقُوْٓا से अभिप्राय यह है कि किसी समय मानव-जाति पर ऐसा समय आएगा जब उन्हें एक पीड़ादायक बादल के रूप में ऐसी विपत्ति का सामना करना पड़ेगा जो कोई छाया या सुरक्षा उपलब्ध नहीं करेगी। छायाएं तो आराम और शरण दिया करती हैं। बादल हमारे और और सूर्य के झुलसा देने वाले ताप के मध्य बाधा बन जाते हैं। उपरोक्त आयतों में किसी सूर्य का वर्णन नहीं किया गया अपितु केवल उसी अग्नि का वर्णन है जिस के ताप से कोई सुरक्षा उपलब्ध नहीं कर सकेगा। इसके विपरीत उस बादल की छाया अग्नि के अज़ाब में अतिरिक्त वृद्धि का कारण होगी। उसकी छाया में कुछ भी सुरक्षित नहीं होगा। निश्चय ही यह संकेत उस गर्म बादल की ओर है जो एटमी धमाके के समय बनता है। जिस घटना का यहां वर्णन हो रहा है उसमें जोगिया रंग के बड़े-बड़े शोले बुलन्द होंगे जिन्हें क़िलों और ऊंटों के समान ठहराया गया है। इस समानता में मात्र ऊंट के रंग की ओर ही नहीं अपितु उसके कोहान की ओर भी संकेत है।

सातवीं शताब्दी के लोग इस विनाशकारी बादल या धुएं के महत्त्व को समझने के योग्य नहीं थे, क्योंकि यह बात उनके बोध से ऊपर थी तथापि आज हमें एटमी धमाकों का भली भांति ज्ञान है तथा इसके परिणामस्वरूप पैदा होने वाले रेडियोधर्मी बादल को हम अच्छी तरह समझ सकते हैं।

इस भयानक विनाश का वर्णन निम्नलिखित आयत में भी मिलता है -

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ (अलमुरसलात 77 : 16)

अनुवाद - तबाही है उस दिन के झुठलाने वालों पर।

यद्यपि يَّوْمَئِذٍ से अभिप्राय प्रलय का दिन भी हो सकता है परन्तु यह उस युग को भी सिद्ध करता है जब उन लोगों को जो ख़ुदा के निशानों का इन्कार करते हैं एक ऐसे धुएं का अज़ाब दिया जाएगा, जिसकी छाया के नीचे प्रत्येक वस्तु पर मृत्यु बरसेगी। यह एक ऐसी छाया होगी जो एक स्थान से दूसरे स्थान हरकत करेगी तथा आराम देने के स्थान पर अज़ाब का कारण होगी। यह वह युग होगा जब मनुष्य उस महान आकाशीय अज़ाब को देखने के पश्चात् अन्तत: परमेश्वर की ओर लौटेगा और उस से उस असहनीय अज़ाब से बचने की याचना करेगा परन्तु जब परमेश्वर का अज़ाब लोगों पर आता है तो क्षमा और मुक्ति का समय पहले ही गुज़र चुका होता है। अत: पवित्र क़ुर्आन फ़रमाता है -

اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ

(अद्दुख़ान 44 : 14-15)

अनुवाद - उनके लिए अब कहां की नसीहत जबकि उनके पास एक प्रकाशमान तर्कों वाला रसूल आ चुका था फिर भी उन्होंने उससे मुख फेर लिया और कहा कि सिखाया-पढ़ाया हुआ (अपितु) पागल है।

मानव-जाति को नबियों के द्वारा चेतावनी देने का उद्देश्य यह होता है कि लोगों को उनके दुष्कर्मों के पीड़ादायक परिणामों से अवगत किया जाए। उपरोक्त भविष्यवाणियां स्पष्ट तौर पर वर्तमान युग से संबंध रखती हैं जिनमें ऐसी घटनाएं वर्णन हुई हैं जिन से प्राचीन युग के लोग पूर्णतया अनभिज्ञ थे। मनुष्य यह देखकर हैरान रह जाता है कि किस विवरण के साथ परमेश्वर ने ऐसी समस्त भविष्यवाणियों की सूचना हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] को पहले से दे दी थी, परन्तु जिस स्पष्टता के साथ आप[स.अ.व.] भविष्य की घटनाओं का वर्णन करते हैं उससे बड़ा शक्तिशाली प्रभाव यह पैदा होता है कि जैसे ये समस्त घटनाएं आप[स.अ.व.] के सामने किसी फिल्म के समान गुज़र रही हैं, तथापि मानव-जाति को इन भविष्यवाणियों के प्रकटन के लिए एक हज़ार वर्ष से भी अधिक प्रतीक्षा करना पड़ी और इन घटनाओं का प्रकटन वर्तमान एटमी युग में ही संभव हुआ। एटमी विनाश की कल्पना बड़ी भयावह है, परन्तु मनुष्य ने इसके कारणों को खोजने की ओर बहुत कम ध्यान दिया है। मनुष्य की दृष्टि सामान्यतया ऊपरी मामलों तक ही सीमित रहती है। बहुत कम लोग ऐसे होते हैं जो अपने गरेबान में झांककर बुराई की पहचान कर सकते हैं। यह अंधापन विशेष तौर पर मनुष्य के टेढ़ेपन से संबंध रखता है। अपने वातावरण में विपत्तियां और बुराइयां फैलाने के बावजूद मनुष्य स्वयं को कभी इसका उत्तरदायी नहीं समझता।

इन्ही विश्वव्यापी विपत्तियों का हम इस समय विश्लेषण कर रहे हैं। एक वैज्ञानिक एटमी धमाकों के पीछे मौजूद कारकों की व्याख्या मात्र भौतिक एवं स्वाभाविक कारणों की सीमा तक ही करता है, परन्तु जब इस प्रकार के विनाशकारी शस्त्रों को मानव अमन और शान्ति के विनाश के लिए प्रयोग किया जाए तो ऐसे शस्त्रों के अन्वेषक वैज्ञानिकों को आरोपी नहीं ठहराया जा सकता अपितु मूल कारण कुछ और होता है। वास्तव में ये विश्व की महाशक्तियां ही हैं जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के अत्याचारपूर्ण तथा अनुचित फैसलों की उत्तरदायी हैं। तथापि अपनी सम्पूर्ण श्रेष्ठता के बावजूद उनकी हैसियत स्वार्थी जनता की सामूहिक सोच के हाथों खेलने वाली गोटियों से अधिक नहीं

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIN 01885 Vol. 1 Thursday 27 October 2016 Issue No. 34

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

है। पवित्र क़ुर्आन यद्यपि इन वैज्ञानिक चमत्कारों का बड़े निश्चित रूप में वर्णन करता है परन्तु विज्ञान के किसी शिक्षक की हैसियत से नहीं अपितु हमारा ध्यान इस वास्तविकता की ओर भी आकर्षित करता है कि मनुष्य के बिगड़े हुए आचरण के मूल कारण वास्तव में अशिष्ट प्रेरक हुआ करते हैं। पवित्र क़ुर्आन न केवल इन गुप्त प्रेरकों का वर्णन करता है अपितु हमारा ध्यान उनके पीछे कार्यरत शक्ति पर भी केन्द्रित करता है अर्थात् वह बन्दूक के ट्रेगर का तो वर्णन करता है परन्तु हमारा ध्यान उस उंगली की ओर भी दिलाता है जो उसे दबाती है। पवित्र क़ुर्आन की चेतावनियों का यही उद्देश्य है। इसी प्रकार वह बारम्बार यह घोषण करता है कि मनुष्य पर होने वाले प्रत्येक अत्याचार का उत्तरदायी वास्तव में मनुष्य ही है। अत: पवित्र क़ुर्आन की दृष्टि से इस सिलसिले में किए जाने वाले सुरक्षात्मक कार्यवाहियों का संबंध मानव आचरण के सुधार से है अर्थात् यदि लोग अपने आचरण में परिवर्तन लाएं और परमेश्वरीय मार्ग-दर्शन के अनुसार अपना सुधार करें तो इस से वह स्वस्थ वातावरण जन्म लेगा जो न्याय एवं इन्साफ़ की स्थापना के लिए आवश्यक है।

क़ुर्आन की भविष्यवाणियां प्रकाश के एक मीनार की हैसियत से आने वाले ख़तरों तथा उनसे बचने के उपायों की ओर स्पष्ट मार्ग-दर्शन करती हैं, परन्तु प्रत्यक्षतया यह बात असंभव दृष्टिगोचर होती है कि मानव मामलों की नौका के खेवनहार इस चेतावनी पर कान धरेंगे और मनुष्य को उन ख़तरों से निकाल कर किसी सुरक्षित स्थान पर ले जाएंगे और यही विनाश का मूल कारण है। मानव आचरण के समस्त पहलुओं का सत्यप्रिय तथा समीक्षात्मक निरीक्षण किए बिना वर्तमान मनुष्य के सामने आने वाली समस्याओं का कोई भी कार्यान्वित करने योग्य हल प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। अत: इन समस्याओं का हल मनुष्य के मूल अधिकारों को यथावत् करने में निहित है। उदाहरणतया सच्चाई, ईमानदारी, न्याय, दूसरों का ध्यान रखना, लोगों के कष्ट का अहसास चाहे उनसे कोई संबंध न हो तथा नेकी के साथ सामान्य रूप से संलग्नता। इन मूल्यों को मानव-संबंधों की परिधि से निकाल दें तो फिर भयंकर विपत्तियों से भागने का कोई स्थान नहीं। इस वर्तमान अवस्था का यही एकमात्र एवं तर्कसंगत परिणाम है।

सूरह 'अलक़मर में इस बात को पूर्वकालीन क़ौमों के इतिहास के सन्दर्भ से स्पष्ट किया गया है, जिन्होंने अपने समय के नबियों के सतर्क करने पर कान न धरा। फलत: वे अपने कष्टदायक परिणाम को पहुंची जिसका उन्हें वादा दिया गया था तथा समय गुज़रने के पश्चात् का पश्चाताप उन के किसी काम न आया। इन डराने से यह लाभ अवश्य प्राप्त हुआ कि वे भावी नस्लों के लिए शिक्षादायक निशान बन गईं। अत: पवित्र क़ुर्आन उनकी त्रासदी की ओर इसलिए संकेत करता है ताकि उनकी मृत्यु से भावी नस्लें उचित पद्धति से जीवन यापन करने की कला सीख सकें।

وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ الْاَنْۢبَآءِ مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ ۙ حِكْمَةٌۢ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ

(अलक़मर 54 : 5-6)

अनुवाद - और उनके पास कुछ सूचनाएं पहुंच चुकी थीं जिनमें बड़ी कठोर डांट-डपट थी। पराकाष्ठा तक पहुंची हुई नीति थी फिर भी डराने वाली बातें काम न आईं।

यदि कोई जाति नसीहत प्राप्त न करे तो अपने उस भयानक विनाश की वह स्वयं उत्तरदायी होगी जो उनकी प्रतीक्षक है। जिस एटमी विनाश का हम वर्णन कर रहे हैं सूरह 'ताहा' में भी उसके अन्जाम के बारे में खोलकर वर्णन किया गया है। इस आयत पर विचार करने से यह भी ज्ञात होता है कि यह विनाश विश्व की महा शक्तियों का अहंकार और **रऊनत*** टुकड़े-टुकड़े करके रख देगा। मनुष्य को सामूहिक रूप से विश्व से नहीं मिटाया जाएगा। संबंधित आयत में स्पष्ट तौर पर यह भविष्यवाणी की गई है कि यह अवसर मानव-जाति के पूर्ण रूप से समाप्त करने का नहीं होगा अपितु अहंकारी राजनीतिक शक्तियां नतमस्तक की जाएंगी तथा उनके कब्रस्तानों पर नवीन व्यवस्था की नींवें उठाई जाएंगी। पर्वतों के समान विश्व की महाशक्तियां इस प्रकार धूल में मिला दी जाएंगी जैसे वह एक चटियल मैदान हो जिसमें कोई असमतलता नहीं होती :-

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّيْ نَسْفًا فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا لَّا تَرٰي فِيْهَا عِوَجًا وَّلَآ اَمْتًا يَوْمَئِذٍ يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهٗ ۚ وَخَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا حِكْمَةٌۢ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ

(ताहा 20 : 106-109)

अनुवाद - और वे तुझ से पर्वतों के बारे में प्रश्न करते हैं। तू कह दे कि उन्हें मेरा रब्ब चूर-चूर कर देगा। अत: वह उन्हें एक साफ समतल मैदान बना छोड़ेगा। तू उसमें न कोई वक्रता देखेगा और न ऊंचाई-नीचाई। उस दिन वे पुकारने वाले का अनुसरण करेंगे जिसमें कोई टेढ़ापन नहीं तथा कृपालु ख़ुदा के सम्मान में स्वर नीचे हो जाएंगे और तू फुसफुसाहट के अतिरिक्त कुछ न सुनेगा।

ख़ुदा तआला जो वक्रताएं दूर करने वाला पूर्ण ख़ुदा है उनके टेढ़ेपन और ऊंच-नीच समाप्त कर देगा तथा उसी की शक्ति से यह आश्चर्यजनक क्रान्ति फैलेगी। यहां पर्वतों से रूपक के तौर पर सरकारें और क़ौमें अभिप्राय हैं, जिनके बारे में पवित्र क़ुर्आन भविष्यवाणी करता है कि जब उनका अहंकार तोड़ दिया जाएगा और अन्तत: वे अपमानित और बदनाम कर दिए जाएंगे और उनकी समस्त बल और अकड़ निकल जाएगी तब वे परमेश्वर के अत्यन्त शालीन स्वभाव पुकारने वाले की आवाज़ पर लब्बैक (उपस्थित हैं) कहेंगे जिसमें कोई टेढ़ापन नहीं। यह विनाश असंख्य एटमी धमाकों के परिणाम-स्वरूप ही संभव है जिस से यह भी ज्ञात होता है कि मनुष्य उस समय तक नसीहत प्राप्त नहीं करेगा जब तक यह विनाश उसके अहंकार को चूर-चूर न कर दे। अज़ाब के वादे के इस खेदजनक सन्देश के साथ-साथ उस से आशा की एक किरण भी फूटती है कि मानव-जाति बचकर प्रकाश के एक नवीन युग में प्रवेश करेगी। मनुष्य अपने आचरण में यदि यथासमय परिवर्तन पैदा न कर सका तो परमेश्वर के इन्कार तथा अपनी मूर्खताओं के परिणाम की एक सीमा तक स्वाद चखने के पश्चात् अन्तत: पश्चाताप कर ही लेगा।

एक अन्य सूरह में पवित्र क़ुर्आन ऐसे भयानक भौगोलिक एवं मौसम के महान परिवर्तनों का वर्णन करता है जो कई प्रदेशों, देशों तथा महाद्वीपों को पूर्णरूप से बंजर करके रख देंगे। संभवत: इसका संबंध एटमी विनाश के पश्चात् के प्रभावों से है जिसकी हमने अभी चर्चा की है। इससे पूर्व यही ज़मीनें विश्व के सुन्दरतम प्रदेशों में गिनी जाती थीं और अपनी अद्वितीय सुन्दरता के कारण प्रसिद्ध थीं। हमारी इच्छा है कि परमेश्वर करे कि भविष्यवाणियों का कम से कम यह भाग तो न ही पूरा हो। इसका निश्चय ही यह मतलब कदापि नहीं कि हम क़ुर्आन की भविष्यवाणियों का सम्मान नहीं करते अपितु हमारी यह इच्छा परमेश्वर की असीम दया पर हमारे सुदृढ़ ईमान से फूट रही है जो बहुत क्षमा करने वाला और बड़ा दयालु एवं कृपालु है। अज़ाब के समस्त वादे चाहे कितने ही स्पष्ट और दो टूक क्यों न हों मनुष्य के अपने कर्म से प्रतिबंधित हैं। हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम की जाति किस प्रकार अपनी स्थिति में परिवर्तन लाने के कारण परमेश्वर के अटल प्रारब्ध से बचा ली गई थी। यह उदाहरण हमारे लिए आशा का दीपक प्रकाशित करता है। इस वास्तविकता के बावजूद कि मनुष्य के शिष्टाचार-मूल्यों में निरन्तर पतन हो रहा है। इन सुधारणा का कोई औचित्य तो नहीं बनता, परन्तु मनुष्य कम से कम आशा का दामन तो थाम सकता है अन्यथा बड़ी निराशा एवं हताशा की भयानक रात तो सामने खड़ी है, परन्तु इन गंभीर रोगों का इलाज परमेश्वर की हस्ती के इन्कार करने वाले नास्तिक "मसीहाओं" के हाथ में नहीं है अपितु उसका एकमात्र इलाज केवल और केवल परमेश्वर के हाथ में है इस शर्त के साथ कि हमारे हाथ हमेशा दुआ के लिए उसके (परमेश्वर) सामने उठे रहें। संभवत: हम ऐसी भाषा बोल रहे हैं जिसे वर्तमान युग के मनुष्य के लिए समझना कठिन है, क्योंकि उसके कान इसके विपरीत भाषा सुनने के अभ्यस्त हो गए हैं। परमेश्वर ही उचित जानता है।"

(इल्हाम अक्ल और सच्चाई पृष्ठ 537-546)

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad